

# मेरा पालनहार अल्लाह है

هندي

अल्लाह पर ईमान का अर्थ  
और उस की वास्तविकता  
(हक़ीक़त)

www.with-allah.com



मुहम्मद बिन सरार अलयामी  
डाक्टर अब्दुल्लाह बिन सालिम बा हम्माम

## अल्लाह पर ईमान

सच्चे ईमान में रहों का जीवन और अधिक प्रसन्नतायें हैं

<https://www.with-allah.com/hi>



# अल्लाह पर ईमान

अल्लाह पर ईमान का अर्थ और उस की वास्तविकता (हकीकत):

सच्चे ईमान में रूहों का जीवन और अधिक प्रसन्नतायें हैं

सर्वशक्तिमान अल्लाह पर ईमान लाने में ही आत्मा (रूह) की खुशी है,ईमान न लाने वाली आत्मा डरी हुयी भटकी और कमज़ोर रहती है जिसे स्थिरता प्राप्त नहीं होती,और अल्लाह पर ईमान लाने में ही मुक्ति (निजात) है,इस का अर्थ है: सच्चा विश्वास रखना कि अल्लाह तआला ही हर चीज़ का रब,बादशाह और पैदा करने वाला है, वही इस बात का हकदार है कि संपूर्ण इबादतें जैसे नमाज़, रोज़ा, दुआ, आशा,डर,हीनता (ज़िल्लत) नम्रता उसी के योग्य हैं,और उस में संपूर्ण विशेषतायें पाई जाती हैं,वह सर्वशक्तिमान अल्लाह हर दोष और हर कमी से पवित्र है।

और अल्लाह पर ईमान लाने में यह भी शामिल है कि उस के फरिशतों,उस की किताबों,उस के संदेशवाहकों,प्रलोक और तक्दीर की अच्छाई और बुराई पर ईमान लाया जाये,और इसी प्रकार ईमान में सही मानव की खुशी है,बल्कि यही मोमिन की दुनियावी स्वर्ग (जन्नत) है और यदि अल्लाह ने चाहा तो उसे मरने के बाद स्वर्ग मिलेगा।

”शरीअत में ईमान कहते हैं: दिल से विश्वास रखने,जुबान से इकरार करने और शरीर के अंगों (आज़ा) से अमल करने को,ईमान आज्ञाकारित (इताअत) से बढ़ता है और पाप करने से घटता है। “.

जब इस का ज्ञान हो गया तो जानना चाहिये कि कर्म (अमल) के स्वीकार्य का आधार ईमान ही है अल्लाह तआला के फरमान की वजह से: {जो नेक काम करे और वह मोमिन (एकेश्वरवादी) भी हो“।}[अल हज्ज: 94].

अल्लाह पर ईमान लाना न्याय, आज्ञादी, ज्ञान, मार्गदर्शन,शान्ति और रूहानी सुरक्षा का नूर है।

## ईमान का महत्व

निःसंदेह सर्वश्रेष्ठ और अधिक पवित्र काम अल्लाह के समीप अल्लाह पर ईमान लाना है अबूज़र की हदीस की वजह से जिस में उन्होंने नबी ﷺ से पूछा: «ऐ अल्लाह के रसूल! कौन सा अमल सर्वश्रेष्ठ है? आप ﷺ ने फरमाया: अल्लाह पर ईमान लाना और उस के मार्ग में जिहाद करना» (मुस्लिम).

यह मार्गदर्शन, और दुनियावी एवं बाद में आने वाली ज़िन्दगी (प्रलोक) की खुशी का कारण है, सर्वशक्तिमान अल्लाह के फरमान की वजह से: {जिस को अल्लाह सच्चा रास्ता दिखाना चाहता है उस के सीने को इस्लाम के लिये खोल देता है"} [अलअन्आम:125].

और ईमान मोमिन को गुनाह से रोकता है, सर्वशक्तिमान अल्लाह के फरमान की वजह से: {बेशक जो लोग (अल्लाह से) डरते हैं जब उन को कोई शक शैतान की तरफ से आ जाता है तो वह याद में लग जाते हैं इस लिये अचानक उन की आँखें खुल जाती हैं"} [अलआराफ:201].

अमल स्वीकार्य होने के लिये ईमान शर्त है, अल्लाह तआला ने फरमाया: {और बेशक तेरी तरफ भी और तुझ से पहले (के सभी नबियों) की तरफ भी वह्य की गई है कि अगर तू ने शिर्क किया तो बेशक तेरा अमल बर्बाद हो जायेगा और निश्चित रूप से तू नुकसान उठाने वालों में से हो जायेगा"} [अज्जुमर:65].

शुद्ध ईमान के कारण अल्लाह तआला अमल



को बरकत वाला बनाता है और दुआओं को क़बूल करता है। {और बेशक तेरी तरफ भी और तुझ से पहले (के सभी नबियों) की तरफ भी वह्य की गई है कि अगर तू ने शिर्क किया तो बेशक तेरा अमल बर्बाद हो जायेगा और निश्चित रूप से तू नुकसान उठाने वालों में से हो जायेगा"} [अज्जुमर:65].

## ईमान के फल

अल्लाह तआला फरमाता है: {क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह (तआला) ने पाक बात की मिसाल (उदाहरण) एक पवित्र पेड़ जैसा बयान किया जिस की जड़ मज़बूत है और जिस की शाखायें आकाश में हैं, जो अपने रब के आदेश से हर समय अपने फल लाता है"} [इब्राहीम:24-25].



ईमान के फल निम्न लिखित हैं:

1- सच्चा ईमान सूकून,मनोवैज्ञानिक आराम और तसल्ली प्रदान करता है,और इस पर अल्लाह तआला का यह कथन फिट बैठता है: {याद रखो कि अल्लाह के मिन्नों पर न कोई डर है न वे दुखी होते हैं"}[यूसुस:62].

2- मोमिनों को अल्लाह तआला की खास संगति प्राप्त होती है,अर्थात वह उन को कुफ्र के अंधेरे और उस के परिणाम से निकाल कर ईमान की रोशनी और उस के सवाब की ओर ले जाता है।

3- अल्लाह की प्रसन्नता और उस स्वर्ग का पाना जिसे अल्लाह तआला ने उस व्यक्ति के लिये तय्यार की है जो ईमान लाये और उस की पुष्टि करे,सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा: {इन ईमानदार मर्दों और औरतों से अल्लाह (तआला) ने उन जन्नतों का वादा किया है जिन के नीचे नहरें बह रही हैं,जहां वे हमेशा रहने वाले हैं और उन पाकीज़ा घर का जो उन खत्म न होने वाले जन्नत में हैं और अल्लाह की खुशी है"}[अतोबा:72].

4-अल्लाह तआला का अपने मिन्नों,अपनी पार्टी और अपने मोमिन बंदो का बचाव करना: {बेशक अल्लाह (तआला) ईमान वालों के दुश्मनों को खुद हटा देता है"}[अल हज्ज:38].

उदाहरण के तौर पर: अल्लाह तआला का अपने नबी मुहम्मद ﷺ का उन की हिज़्रत के समय बचाव करना और सर्वशक्तिमान अल्लाह तआला का खलील इब्राहीम ﷺ का बचाव करना उस समय जब उन्हें आग में डाल दिया गया था।

5- दीन में महानता और इमामत प्राप्त होती है, सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा: {और हम ने उन में से चूँकि उन लोगों ने सब्र किया,ऐसे अगुवा बनाये जो हमारे आदेश से लोगों की हिदायत करते थे"}[अस्सज्दा:24].दीनदार और अल्लाह पर यकीन करने वाले इस की जीवित मिसाल(उदाहरण) हैं,अल्लाह तआला ने उन की याद और उन के कारणामों को सदा के लिये बाकी रखा जब कि वे ज़मीन के तह में दफन हैं,वे हम में नहीं हैं पर उन के प्रभाव और उन की खबरें जीवन में मौजूद हैं।



अल्लाह पर ईमान लाना कमज़ोर व्यक्ति और उस के रब के बीच सम्बंध है जबकि शक्तिमान व्यक्ति अपनी शक्ति को उसी (अल्लाह) से प्राप्त करता है।



6- अल्लाह तआला का मोमिनों से प्रेम करना, अल्लाह तआला ने कहा: {वे अल्लाह के प्यारे होंगे और वे भी अल्लाह से प्यार करते होंगे"} [अलमायदा:54].

और फरमाया: {बेशक जो ईमान लाये हैं और जिन्होंने नेक अमल किये हैं उन के लिये अल्लाह रहमान मुहब्बत पैदा कर देगा"} [मरयम:96].

7- लोक प्रलोक में अच्छा जीवन, सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा: {जो इंसान नेकी के काम करे मर्द हो या औरत और वह ईमान वाला हो तो हम उसे बेशक सब से अच्छी जिन्दगी देंगे और उन के नेकी के कामों का अच्छा बदला भी उन्हें जरूर देंगे"} [अन्नहल: 97]. तो अच्छे जीवन और खुशी ढूँडने वाले कहाँ हैं?!!

बिना ईमान के जीवन अपरिहार्य मरना है..  
बिना ईमान के आँख अंधी है..  
बिना ईमान के जुबान गूँगी है..  
बिना ईमान के हाथ पंगु (शल) है..

8- अल्लाह की मुहब्बत मोमिन के लिये है और मोमिन की मुहब्बत अल्लाह के लिये, सर्वशक्तिमान अल्लाह फरमाता है: {यह अल्लाह के प्यारे होंगे और वे भी अल्लाह से प्यार करते होंगे"} [अलमायदा:54].

अर्थात् वह उन से प्रेम करता है और लोगों के दिलों में उन के लिये प्रेम डाल देता है.

9- अल्लाह तआला की गरिमा से मोमिनों के लिये शुभसमाचार का प्राप्त होना है, सर्वशक्तिमान अल्लाह फरमाता है: {और ईमान वालों को खुशखबरी सुना दीजिये"} [अतोबा:112].

और शुभसमाचार महान चीज़ के कारण ही होता है जिस का प्रभाव त्वचा पर पड़ता है, इसी कारण इसे शुभसमाचार कहा जाता है, और सर्वशक्तिमान अल्लाह की दया, उस की प्रसन्नता, उस के स्वर्ग से अधिक बड़ी चीज़ कुछ भी नहीं हो सकती, सर्वशक्तिमान अल्लाह फरमाता है: {और ईमान वालों और नेक काम करने वालों को उन स्वर्गों की खुशखबरी दो जिन के नीचे नहरें बह रही हैं"} [अलबकरा:25].

10- ईमान स्थिरता का कारण है, सर्वशक्तिमान अल्लाह फरमाता है: {जिन से लोगों ने कहा कि लोग तुम्हारे लिये जमा हो चुके हैं इस लिये उन से डरो तो उन का ईमान बढ़ गया और कहा कि अल्ला हमारे लिये बस है वह सब से अच्छा संरक्षक(वली) है"} [आले इमरान:173].

संदेशवाहकों, सहाबा, ताबईन और उन के अनुयायियों का बलिदान इस स्थिरता का सबूत है।

11- उपदेश से लाभ उठाना, सर्वशक्तिमान अल्लाह फरमाता है: {और शिक्षा (नसीहत) देते रहें बेशक यह शिक्षा ईमान वालों को लाभ पहुंचायेगी"} [अज्जारियात:55].

ईमान वाले ही वाज़ो नसीहत से लाभ उठाते हैं.

मोमिन के लिये हर हाल में भलाई रख दी गई है कुशादगी और तंगी दोनों हाल में खैर मोमिन के संग होता है,अल्लाह के रसूल ﷺ ने कहा: «मोमिन की दशा कितनी अच्छी है कि उस के सब कार्य उस के लिये भलाई के कार्य हैं,यह विशेषता केवल मोमिन को ही प्राप्त है कि जब उसे कोई खुशी पहुंचती है तो वह शुक्र अदा करता है, यह उस के लिये अच्छा है तथा जब कष्ट पहुंचता है तो वह सब्र करता है तो यह भी उस के लिये अच्छा है।» (मुस्लिम),

ईमान मोमिन को कष्ट में सब्र और खुशी में शुक्र पर उभारता है।

13- बड़े पाप (गुनाह) में पड़ने से हिफाज़त,नबी ﷺ की सही हदीस में आया है: «व्यभिचारी (ज़िनाकार) व्यभिचार करने की हालत में मोमिन नहीं रहता».. (बुखारी).

यह महान ईमान के महान फल हैं,खुशी, मन की शान्ति,और सूकून चैन ढूँडने वाले कहाँ हैं?



## ईमान के प्रभावः

मेमिन के जीवन में ईमान के प्रभावः

मेमिन के जीवन में ईमान के प्रभावः {ईमान वालों का कहना तो यह है कि जब उन्हें इस लिये बुलाया जाता है कि अल्लाह और उस का रसूल उन में फैसला करदे तो वह कहते हैं कि हमने सुना और मान लिया,यही लोग कामयाब होने वाले हैं"}[अन्नूर:51].ईमान मोमिन को अल्लाह के आदेश का पालन और उस की ताबेदारी करने में जल्दी करने पर उभारता है।

अल्लाह पर ईमान लाना जीवन है और अल्लाह के साथ जीवन ईमान है.

अल्लाह तआला फरमाता है: {तो कसम है तेरे रब की यह (तब तक) ईमान वाले नहीं हो सकते जब तक कि सभी आपस के इखितलाफ में आप को फैसला करने वाला न कुबूल कर लें,फिर जो फैसला आप कर दें उन से अपने दिलों में जरा भी तंगी और नाखुशी न पायें और फरमाँबरदार की तरह कुबूल कर लें"}[अन्निसा:65].

बल्कि ईमान मोमिन को स्वीकरण और अल्लाह के आदेश से संतुष्टि होने पर उभारता है।

2- अल्लाह तआला का स्पष्ट और गुप्त दोनों

प्रकार के शिर्क से अपने बंदे का बचाव,अर्थात अल्लाह के अतिरिक्त से न तो दुआ करना न ही उस से सहायता या दुहाई माँगना,क्योंकि सर्वशक्तिमान अल्लाह ही लाभ और हानि का मालिक है: {और अगर अल्लाह (तआला) तुझ को कोई तकलीफ दे तो उस को दूर करने वाला अल्लाह तआला के सिवाय कोई दूसरा नहीं है"} [अलअन्आम:17].

3-अल्लाह तआला के लिये प्रेम और उसी के लिये घृणा करना,और यही ईमान की शक्तिशाली कड़ी है, सर्वशक्तिमान अल्लाह फरमाता है: {सभी मुसलमान भाई भाई हैं"}[अल हुज्रत:10].

इस का सब से अच्छा उदाहरण अन्सार का मुहाजिरीन को अपना भाई बनाना और अपने भाइयों के लिये धन और पराण की कुरबानी देना है,निर्दोष मुहम्मद ﷺ ने कहा: «तुम में से कोई व्यक्ति मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि वह अपने भाई के लिये वही न पसंद करे जो अपने लिये पसंद करता है» (बुखारी).

"ऐ ईमान वाले! (पूरे तौर पर) मोमिन बन जाओ"।  
ईमान के महान स्थान के कारण मोमिनों को उस की ओर बुलाना और उन्हें इस पर उभारना.



4- अल्लाह के मार्ग में जिहाद करने पर सब्र करना, और प्रिय और उत्तम चीज़ खर्च करना ताकि अल्लाह तआला प्रसन्न हो जाये, अल्लाह तआला फरमाता है: {ईमान वाले तो वह हैं जो अल्लाह पर और उस के रसूल पर (मज़बूत) ईमान लायें, फिर शंका-संदेह न करें और अपने माल से और अपनी जान से अल्लाह के रास्ते में धर्मयुद्ध (जिहाद) करते रहें, यही लोग सच्चे हैं"} [अल हुज़ात:15].

5- अल्लाह, उस के वादों, और जो कुछ उस के पास है उस से दिल का जुड़ना अथवा उस से प्रसन्न होना, उस के लिये, अल्लाह पर ईमान लाना और उस की बंदगी करना मोमिन के लिये स्वर्ग समान है, और वह प्रलोक के स्वर्ग की आशा रखता है जिस का वादा अल्लाह तआला ने उस से कर रखा है, बल्कि मोमिन को जो भी थकावट, बीमारी और परेशानी पहुँचती है उस पर वह अल्लाह से सवाब और अपने आमाल की किताब में लिखे जाने की उम्मीद रखता है, अल्लाह तआला फरमाता है: {मदीना और उस के आस पास गाँव वालों के लिये ठीक न था कि रसूलुल्लाह का साथ छोड़ कर पीछे रह जायें न यह कि अपनी जान को उन की जान से ज़्यादा प्यारा समझें, यह इस कारण कि उन को अल्लाह की राह में जो प्यास लगी और जो थकान पहुँची और जो भूक लगी और जो चलना चले, जो काफिरों के लिये क्रोध का कारण बना हो, और दुश्मनों की जो कुछ खबर ली, उन सब पर उन के नाम नेक काम लिखा गया, बेशक अल्लाह तआला नेकों का बदला बरबाद नहीं करता, और जो भी छोटा और बड़ा उन्होंने खर्च किया और जितने मैदान उन को पार करने पड़े, यह सब भी उन के नाम लिखा गया ताकि अल्लाह उन के कामों का अच्छे से अच्छा बदला अता करें"} [अतोबा:120-121].

यह सब अल्लाह तआला पर ईमान और उस के मामले में सत्य अपनाने वालों के लिये है.

6- अल्लाह और उस के रसूल की विलायत का प्राप्त होना, अल्लाह तआला फरमाता है: {तुम्हारा दोस्त खुद अल्लाह, उस के रसूल और ईमान लाने वाले हैं"} [अल माइदा:55].

अल्लाह की दोस्ती का अर्थ, अर्थात अल्लाह तआला से मुहब्बत, उस के दीन की मदद, उस के दोस्तों से प्रेम करना है और जो इस के विपरित हैं उस से मुक्ति होना है, क्योंकि वे अल्लाह के दुश्मन हैं, सर्वशक्तिमान अल्लाह कहता है: {अल्लाह पर और क़यामत के दिन पर ईमान रखने वालों को आप अल्लाह और उस के रसूल के विरोधियों से प्रेम करते हुये कभी नहीं पायेंगे चाहे वे उन के पिता या उन के पुन्न या उन के भाई या उन के सम्बन्धी ही क्यों न हों, यही लोग हैं जिन के दिल में अल्लाह ने ईमान लिख दिया है और जिनकी पुष्टि अपनी आत्मा (रूह) से की है और जिन को उन स्वर्गों में प्रवेश (दाखिला) देगा जिन के नीचे पानी की नहरें बह रही हैं, जहाँ यह हमेशा रहेंगे, अल्लाह उन से खुश है और यह अल्लाह से खुश हैं, यह अल्लाह की सेना है, जान लो कि बेशक अल्लाह के गिरोह वाले ही कामयाब लोग हैं"} [अल मुजादला:22].

बल्कि मोमिन तो अल्लाह, उस के मैसंजर, और मोमिनों को दोस्त रखता है, और वह काफिरों को बिल्कुल दोस्त नहीं रखता, सर्वशक्तिमान अल्लाह कहता है: {मोमिनों को चाहिये कि ईमान वालों को छोड़ कर काफिरों को अपना दोस्त न बनायें"} [आले इमरान:28].



7- अच्छे आचार की प्राप्ति,नबी ﷺ से साबित है आप ने फरमाया:

4- अल्लाह के मार्ग में जिहाद करने पर सब्र करना,और प्रिय और उत्तम चीज़ खर्च करना ताकि अल्लाह तआला प्रसन्न हो जाये,अल्लाह तआला फरमाता है: {ईमान वाले तो वह हैं जो अल्लाह पर और उस के रसूल पर (मज़बूत) ईमान लायें,फिर शंका-संदेह न करें और अपने माल से और अपनी जान से अल्लाह के रास्ते में धर्मयुद्ध (जिहाद) करते रहें,यही लोग सच्चे हैं"}[अल हुज़ात:15].

और लज्जा महानतम स्वभाव में से है,मोमिन अपने भाइयों के संग अपने स्वभाव को अच्छा करता है ताकि सांसारिक जीवन के आनंद में कोई समस्या कोई विभेद और कोई झगड़ा न हो...यह सारी बातें इस लिये क्योंकि यह मोमिन है और यह विशेषतायें मोमिन के लिये खास हैं.

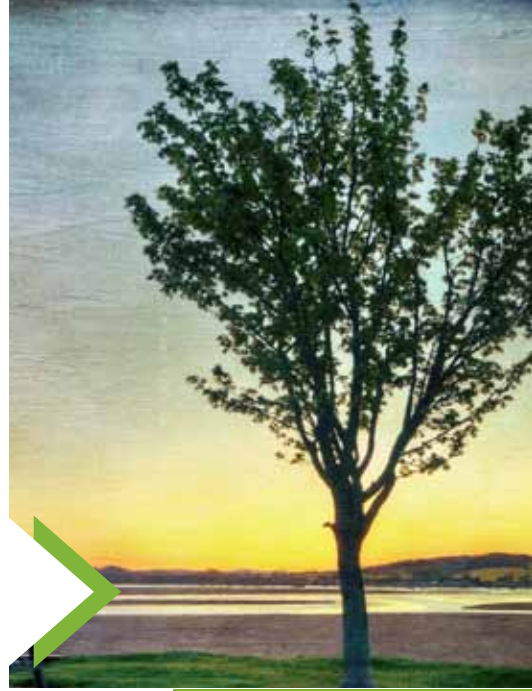
8- सच्चा सुख और मनोवैज्ञानिक आराम यह ऐसी चीज़ है जिस के कारण वह महसूस करता है कि उसे दुनियावी जन्नत में प्रसन्नता (खुशी) और मनोशांति मिल रही है, क्योंकि उस का रब एक है और वह सर्वशक्तिमान अल्लाह है,उस के नबी एक हैं और वह मुहम्मद ﷺ बिन अब्दुल्लाह हैं,उस का मन्हज एक है और वह है अल्लाह की प्रसन्नता की प्राप्ति और उस का लक्ष्य (हदफ) एक है और वह स्वर्ग है जिस की चैड़ाई आकाशों और पृथ्वी के समान है.

और जब आप दायें और बायें देखें और आप को दिखे कि मनोरोग क्लीनिक रोगियों से भरा पड़ा है, और आप को शिकायतें,चिंतायें संकट,अनिद्रा,नींद की कमी,चिंतन,डर और बुरे सपने सुनाई दें तो आप अच्छी तरह जान लें कि यह सब सर्वशक्तिमान अल्लाह पर ईमान से दूरी और दुनिया से अधिक रिश्ता

नाता जोड़ने के कारण है, भौतिकवाद रूहानी पहलू पर भारी पड़ रहा है, और रूहानी पहलू को संतुष्ट करने के लिये मानव को अधिक अवश्यकता है, और यह चीज़ बिना सर्वशक्तिमान अल्लाह पर ईमान, उस के संग तअल्लुक जोड़ने, सदा उस का ज़िक्र करने, फरिशतों, (आसमानी) किताबों, संदेशवाहकों, प्रलोक और अच्छी, बुरी, मीठी कड़वी तक्दीर पर ईमान लाने के बिना प्राप्त नहीं हो सकता।

महत्वपूर्ण यह है कि अधिकतर लोग दिल की दवा, और दिली सुकून से गाफिल हैं, वे दुनिया की जन्नत से गाफिल हो कर खतम होने वाली दुनिया के मलबे के पीछे पड़े हुये हैं, न तो यह लोग वह कर सकते हैं जिसे चाहते हैं और न ही पहले रास्ते पर चल कर इन्हें आराम मिल पा रहा है।

और रूहानी सुकून ईमान के बिना नहीं मिल सकता, क्योंकि आत्मा अल्लाह की ओर से है और शरीर को अल्लाह तआला ने मिट्टी से बनाया है, पस जब जब रूहानी पहलू को संतुष्टि प्राप्त होगी तो आप का नफस ऊँचाई की ओर बढ़ेगा, परवान चढ़ेगा, उसे शान्ति मिलेगी और वह तुच्छ चीज़ों की परवाह नहीं करेगा, और जब जब रूहानी पहलू में कमी होगी आप का नफस कामज हैवानी फिन्नत की और लुढ़क जायेगा और उस की तंगी अथवा परेशानी बढ़ जायेगी, और स्वयं उस की निगाह में दुनिया अंधेरी हो जायेगी।





## अल्लाह का परिचय कराने वाले रसूलों पर ईमान:

अल्लाह तआला ने अपने बंदों को बेकार नहीं पैदा किया और न उन्हें व्यर्थ छोड़ा,इसी कारण उन के पास ऐसे संदेष्टा भेजे जिन्होंने अल्लाह तआला की शक्तियों,उस की पूर्णता और उस की शरीअत का परिचय करवाया,और अल्लाह तआला ने सर्वातम इंसानों को भेजा,जिन में से अधिक रसूल भेजे जैसे नूह,इब्राहीम,मूसा,ईसा अलैहिमुस्सलाम,और ईशदौत्य(रिसालत)को सर्वश्रेष्ठ संदेष्टा मुहम्मद ﷺ के जरिये पूरा किया,और संदेशवाहकों को वह सब निशानियाँ (मोजज़ात) दीं जो उन की सच्चाई को प्रमाणित करती हैं,उन्होंने अमानत की तब्लीग की,ईशदौत्य (अल्लाह के पैगाम) को पहुँचाया और लोगों को उन के रब और पैदा करने वाले से परिचय करवाया,इस लिये जिस ने इन की ईशदौत्य और उन की सत्यता को नहीं स्वीकारा उस ने अल्लाह को भी नहीं स्वीकारा,अल्लाह तआला ने फरमाया: {रसूल उस चीज़ पर ईमान लाये जो उस की तरफ अल्लाह (तआला) की ओर से उतारी गयी और मुसलमान भी ईमान लाये,यह सब अल्लाह (तआला) और उस के फरिश्तों पर और उस की किताबों पर और उस के रसूलों पर ईमान लाये"}[अल बकरा:285].

तो सब के सब नबी और रसूल अल्लाह की ओर से भेजे गये, हम उन सब पर ईमान लाते हैं,अल्लाह तआला ने फरमाया: {उस के रसूलों में से किसी के बीच हम फर्क नहीं करते।}[अल बकरा:285].

और अल्लाह तआला ने रसूलों पर किताबें उतारीं ताकी वह मानव के लिये रोशनी बनें अर्थात उन की मार्गदर्शक कर सकें,इब्राहीम को सहीफे दिये गये,दाऊद को ज़बूर,मूसा को तौरात,ईसा का इंजील अलैहिमुस्सलाम, और मुहम्मद ﷺ को मोजज़ाती किताब कुरआन दिया, अल्लाह तआला ने फरमाया:

{यह एक ऐसी किताब है कि इस की आयतें मज़बूत की गयी हैं फिर मुफस्सल बयान की गई हैं एक हिकमत वाले पूर्णज्ञान वाले की ओर से"}[हूद:1].

और अल्लाह तआला ने इसे मार्गदर्शन,प्रकाश,अधिकता(बरकत वाला)और प्रमाण बनाया,अल्लाह तआला ने फरमाया: {और यह (पाक कुरआन) एक मुबारक किताब है जिसे हम ने उतारा,इस लिये कि तुम इस की इ'बा करो और अल्लाह से डरो ताकि तुम पर दया की जाये"}[अल अनआम:155].

एवं अल्लाह तआला ने फरमाया: {ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की तरफ से दलील आ चुकी है और हम ने तुम्हारी तरफ वाज़ेह और साफ नूर (पाक कुरआन) उतार दिया है"}[अल निसा:174].

और अल्लाह तआला ने अंतिम नबी व रसूल और इंसानों में सब से सर्वश्रेष्ठ मुहम्मद ﷺ और उन की रिसालत पर ईमान को कलमये शहादत (اللَّهُ وَالشَّهَدُ أَنْ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ) में सर्वशक्तिमान अल्लाह पर ईमान लाने के संग जोड़ दिया है,अल्लाह तआला ने आप को दयालू



बना कर भेजा, आप ने लोगों को अंधेरों से रोशनी, जेहालत से ज्ञान और गुमराही से हिदायत की ओर बुलाया, आप ने न्यास (अमानत) को पहुँचाया, उम्मत की शुभचिन्ता की और आप ﷺ को अपनी उम्मत की अधिक चिन्ता रहती थी,

अल्लाह तआला ने फरमाया: {तुम्हारे पास एक ऐसे पैगम्बर आये हैं जो तुम्हारी ही जाति से हैं जिन को तुम्हारे नुक्सान की बातें बहुत भारी लगती हैं, जो तुम्हारे फायदे के बड़े इच्छुक रहते हैं, ईमान वालों के लिये बहुत ही शफीक दयालू हैं"} [अतौबा: 128].

और अल्लाह तआला ने अपने नबी और रसूल ﷺ को उन के योग्य अनुसार अधिकार दिये आप इंसानों में सब से सर्वश्रेष्ठ और उन के सरदार थे, आप ﷺ ने फरमाया: «मैं आदम की अवलाद का सरदार हूँ और इस में कोई गर्व की बात नहीं» (इब्ने माजा)

और नबी ﷺ के अधिकार (हुकूक) में से:

1- इस बात पर ईमान लाना है कि आप अल्लाह के बंदे और उस के रसूल हैं और अल्लाह तआला ने आप को संसार वालों के लिये दया (रहमत) बना कर भेजा है आप ने न्यास (अमानत) को पहुँचाया, ईशदौत्य की तबलीग की अल्लाह तआला ने फरमाया: {तो तुम अल्लाह पर और उस के रसूल पर और उस ज्योति (नूर) पर जिसे हम ने उतारा है ईमान लाओ"} [अतगाबून: 8].

और नबी ﷺ ने फरमाया: «उस ज्ञात की कसम जिस के हाथ में मुहम्मद की जान है, मेरे विषय में कोई भी इस उम्मत का आदमी चाहे वह यहूदी हो या ईसाई सुने फिर वह मर जाये और मेरी लायी हुई चीज़ पर ईमान न लाये तो वह नरक में जायेगा।» (मुस्लिम).

2- जो चीज़ें आप को अल्लाह की ओर से मिली हैं उस का अनुसमर्थन (तस्दीक) और कबूल करना और इस बात का विश्वास रखना कि यही सत्य है निःसंदेह आप ने इसे अल्लाह तआला की ओर से पहुँचाया है, अल्लाह तआला ने फरमाया: {ईमान वाले तो वे हैं जो अल्लाह पर और उस के रसूल पर ईमान लायें फिर शंका- संदेह न करें"} [अलहज्रात: 15].

और अल्लाह तआला ने फरमाया: {तो कसम है तेरे रब की यह ईमान वाले नहीं हो सकते जब तक के सभी आपस के इख्तिलाफ में आप को फैसला करने वाला न कुबूल करलें, फिर जो फैसला आप करदें उन से अपने दिलों में ज़रा भी तंगी और नाखुशी न पायें और फरमाँबरदार की तरह कुबूल करलें"} [अन्निसा: 65].

3- नबी ﷺ से प्रेम करना, अल्लाह तआला ने फरमाया: {कह दीजिये कि अगर तुम्हारे बाप तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी बीवियाँ और तुम्हारे वंश और कमाया हुआ धन और यह तिजारत जिस की कमी से तुम डरते हो, और वे घर जिन्हें तुम प्यारा रखते हो (अगर) यह तुम्हें अल्लाह और उस के रसूल और अल्लाह की राह में जिहाद से अधिक प्यारे हैं तो तुम इन्तेज़ार करो कि अल्लाह तआला अपना अज़ाब ले आये, अल्लाह तआला फासिकों को रास्ता नहीं दिखाता है"} [अतौबा: 24].

और नबी ﷺ ने फरमाया: «तुम में का कोई व्यक्ति उस वक्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उस के निकट उस के पिता उस की संतान,और संपूर्ण लोगों से अधिक प्रिय न हो जाऊँ।» (बुखारी).

4- आप की आदर व सम्मान एवं प्रतिष्ठा करना,अल्लाह तआला ने फरमाया: {ताकि तुम अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाओ और उस की सहायता एवं सम्मान करो}[अल फतह:9].

और अल्लाह तआला ने फरमाया: {जो लोग इस नबी पर ईमान लाये और उन की ताईद की,उन की सहायता की,और उस नूर की इयाबा की जो उन के साथ भेजा गया है,ऐसे लोग पूरी कामयाबी हासिल करने वाले हैं}[अल आराफ:157].

5- नबी ﷺ के वह घर वाले जो इस्लाम लाये,आप की सुन्नत को अपनाया उन से प्रेम करना, उन से लगाव रखना और उन की इज्जत करना, और हमारे नबी मुहम्मद ﷺ की वसियत को समझना,जब कि आप ने फरमाया: «मैं अपने घर वालों के बारे में तुम्हें अल्लाह का खौफ याद दिलाता हूँ, मैं अपने घर वालों के बारे में तुम्हें अल्लाह का खौफ याद दिलाता हूँ, मैं अपने घर वालों के बारे में तुम्हें अल्लाह का खौफ याद दिलाता हूँ» (मुस्लिम)

और आले बैसे रसूल अर्थात नबी ﷺ के घर वाले लोगों में सब से श्रेष्ठ हैं जैसे आप की बीवियाँ,आप की अवलाद और आप के वह रिश्तेदार जिन पर सदका का माल हराम है,इन की तौहीन करना,इन्हें बुरा भला कहना जायज़ नहीं है जैसा कि उन्हें गुनाहों से मासूम समझना या अल्लाह को छोड़ कर उन को पुकारना नाजायज़ है।

6- आप ﷺ के वह सहाबा जो आप पर ईमान लाये और आप की तस्दीक की उन से प्रेम करना,और उन के अन्दर कमी न ढूँडना क्योंकि अल्लाह तआला ने उन की तारीफ की है।

7- आप ﷺ के वह सहाबा जिन्होंने आप की तस्दीक की,आप पर ईमान लाये उन के जीवन चरिन्न में बुराई न ढूँडना क्योंकि यह उन लोगों में से हैं जिन की अल्लाह तआला ने तारीफ की है,फरमाया: {मोहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग उन के साथ हैं काफिरों पर कठोर हैं आपस में रहम दिल हैं तू उन्हें देखेगा कि रूकू और सज्दे कर रहे हैं,अल्लाह की कृपा और खुशी की कामना में हैं,उन का निशान उन के मुँह पर सज्दों के असर से है}[अल फतह:29].



और नबी ﷺ ने उन के बारे में कहा: «मेरे सहाबा को गाली मत दो, मेरे सहाबा को गाली मत दो, उस ज्ञात की कसम जिस के हाथ में मेरी जान है अगर तुम में से कोई उहुद पहाड़ के बराबर सोना भी अल्लाह की राह में खर्च करे तो भी वह उन के मुद (सेर भर, एक मापने का पैमाना) या आधे सेर के बराबर नहीं पहुँच सकता» (मुस्लिम)

और सहाबा में सब से श्रेष्ठ खुलफाये राशदीन: अर्थात् अबूकर ﷺ फिर उमर ﷺ फिर उसमान ﷺ और अली ﷺ हैं अल्लाह तआला उन से और संपूर्ण सहाबा से प्रसन्न हो, अल्लाह तआला ने फरमाया:

{और जो मुहाजिर(मक्का से मदीना आये हुये लोग) और अंसार (मदीना के मूल निवासी) पहले हैं अर्थात् पहले ईमान लाये हैं और जितने लोग बिना किसी गर्ज से उन के पैरोकार हैं अल्लाह उन सभी से खुश हुआ और वे सब अल्लाह से खुश हुये और (अल्लाह ने) उन के लिये ऐसे बाग का इन्तेज़ाम कर रखा है जिन के नीचे नहरें बहती हैं, जिन में वे हमेशा रहेंगे, यह बड़ी कामयाबी है"} [अतोबा:100].

इन सभी ने नबी ﷺ की ओर से तब्लीग की यहाँ तक कि दीन और ज्ञान हम तक पहुँचा।





## अल्लाह से मुलाकात पर ईमान

संपूर्ण सृष्टि को अल्लाह की ओर लौटना है और वही उन के लौटन की जगह और उन का अंजाम है, और यह अल्लाह पर ईमान लाने का महत्वपूर्ण रुकन है, बल्कि यह ईमान के अर्कान में से है, और ईमान के अर्कान में से प्रलोक पर ईमान लाना है, यह बात प्रमाणित है कि जब हमारे नबी (मुहम्मद) ﷺ से जिब्रील अमीन ने आप के सहाबा के सामने उन्हें अर्काने ईमान सिखाने की निय्यत से पूछा तो आप ﷺ ने उन से फरमाया: «तुम अल्लाह पर ईमान लाओ और उस के फरिशतों पर ईमान लाओ और उस की किताबों पर और उस के रसूलों पर और प्रलोक पर और तक्दीर की अच्छाई और उस की बुराई पर ईमान लाओ।» (मुस्लिम)-

और इसे अल योमिल आखिर (अंतिम दिन) इस लिये कहा जाता है क्योंकि इस के बाद कोई दिन नहीं होगा वह इस प्रकार कि जन्नती जन्नत में और जहन्नमी जहन्नम में चले जायेंगे, और कुरआन में इस दिन के अनेक नाम बताये गये हैं जो इस दिन की स्थिति उस की महानता और उस में पेश आने वाले घटनाओं पर प्रमाण (दलालत करते) हैं, जैसे योमुल वाक्रेआ (वाक्रे होने वाली) क्योंकि इस का आना यकीनी है, और इसे अल खाफिज़ा (पस्त करने वाली) और अर्राफेआ (उठाने वाली) कहा जाता है क्योंकि उस दिन एक क्रौम के दरजे को ऊँचा करके उन्हें जन्नत में रखा जायेगा और दूसरी क्रौम के दरजे को कम करके उन्हें जहन्नम में डाला जायेगा, और इस दिन को हिसाब और अदले बदले का दिन भी कहा गया है और इसे अलहाक्का (सिद्द होने वाली) भी कहा गया है क्योंकि उस दिन अल्लाह तआला की खबरें सत्य साबित होंगी और इसे अतामा कहा गया है जिस का अर्थ गालिब होने के हैं क्योंकि यह दिन सब पर गालिब होगा और इस दिन को अस्साख्खा (कान बहरे करने वाली) भी कहा गया है क्योंकि सूर फूंकने के कारण लोग बहरे हो जायेंगे, और इसे योमुल वर्ईद (वादे का दिन) कहा गया है क्योंकि उस दिन काफिरों से किया हुआ अल्लाह के अज़ाब का वादा पूरा होगा, और इस दिन को योमुल हस्रह (अफसोस व शर्मिन्दगी का दिन) भी कहा गया है क्योंकि इस दिन लोग हस्रत और अफसोस करेंगे, और इस दिन को योमुत्तलाक़ (मिलने का दिन) कहा गया है, क्योंकि सब एक जगह पर मिलेंगे, और इस दिन को योमुल आज़िफा (करीब आने वाली) भी कहा गया है क्योंकि यह अधिक करीब है और इस दिन को योमुत्तनाद (हाँक पुकार का दिन) भी कहा गया है क्योंकि उस दिन एक दूसरे को पुकारेंगे, जन्नती जहन्नमियों को और जहन्नमी जन्नतियों को पुकारेंगे, और उस दिन को योमुन अक्रीम (बाँझ दिन) भी कहा गया है, क्योंकि वह अंतिम दिन होगा उस के बाद कोई दिन नहीं आयेगा, और इस दिन को अद्दारुल आखिरा (आखिरत का घर) भी कहा गया है, और इस दिन को दारुल करार (मुस्तक़िल घर) भी कहा गया है, और इस दिन को अलगाशिया (ढाँप लेने वाली) भी कहा गया है क्योंकि यह लोगों को ढाँप लेगी... इस के अतिरिक्त भी अनेक नाम हैं।



प्रलोक पर ईमान निम्न लिखित प्रकार हैं:

पहली बात: मरने के बाद पेश आने वाली चीजों पर ईमान लानाजैसे कब्र की परिक्षा (आज़माइश):

इस का अर्थ मुरदे से उस के रब,उस के दीन और उस के नबी के विषय में प्रश्न है, ईमान वालों को अल्लाह (तआला) पक्की बात के साथ कायम रखता है,तो वह कहता है: मेरा रब अल्लाह है और मेरा दीन इस्लाम है और मेरे नबी मुहम्मद ﷺ हैं,और अल्लाह तआला ज़ालिमों को भटका देता है,काफिर कहेगा (हाय ...हाय मैं नहीं जानता) और कपटाचारी या शक करने वाला कहेगा: (मैं नहीं जानता मैं ने लोगों को यह कहते हुये सुना तो मैं ने भी वैसा कह दिया).

कब्र का अज़ाब और उस की नेमतें:

कब्र का अज़ाब ज़ालिमों,कपटाचारियों और काफिरों और कुछ गुनहगार मुसलमानों के लिये है,अल्लाह तआला ने फरमाया: {अगर आप ज़ालिमों को मौत के सख्त अज़ाब में देखेंगे जब कि फरिश्ते अपने हाथ लपकाये होते हैं, कि अपनी जान निकालो,आज तुम्हें अल्लाह पर नाहक इल्ज़ाम लगाने और घमंड से उस की आयतों का इन्कार करने के कारण अपमानकारी(रुस्वाकुन) बदला दिया जायेगा"}[अल अन्आम:93].

{अल अन्आम:93}. {आग है जिस के सामने यह हर सुबह और शाम को लाये जाते हैं और जिस दिन कयामत आयेगी(हुकम होगा कि) फिरऔन के पैरोकारों को अधिक सख्त अज़ाब में डालो}[ग़ाफिर:46].

और जैद बिन साबित رضي الله عنهकी हदीस में है जिसे वे नबी ﷺ से रिवायत करते हैं,आप ने फरमाया: «अगर मुझे डर न होता कि तुम दफन करना छोड़ दोगे तो ज़रूर मैं अल्लाह से दुआ करता कि वह तुम्हें कब्र का अज़ाब सुनाये जो मैं सुनता हूँ,फिर आप ﷺहमारी ओर मुतवज्जेह हुये,फरमाया: कब्र के अज़ाब से अल्लाह की पनाह माँगो,तो हम सब ने कहा: हम कब्र के अज़ाब से अल्लाह की पनाह माँगते हैं,फिर आप ﷺ ने कहा: कब्र के अज़ाब से अल्लाह की पनाह माँगो, तो हम सब ने कहा: हम कब्र के अज़ाब से अल्लाह की पनाह माँगते हैं,फिर आप ﷺ ने कहा: तुम ज़ाहिरी और बातिनी (पोशीदा) फित्नों से अल्लाह तआला की पनाह माँगो,हम सब ने कहा हम ज़ाहिरी व बातिनी फित्नों से अल्लाह की पनाह माँगते हैं,फिर आप ﷺ ने फरमाया: तुम दज्जाल के फित्ने से अल्लाह की पनाह माँगो।» (मुस्लिम).

उसमान رضي الله عنه जब किसी कब्र के पास खड़े होते तो इस कदर रोते कि आप की दाढ़ी भीग जाती, कहा गया कि जन्नत और जहन्नम के बारे में बयान किया जाता है तो आप नहीं रोते हैं और इस से अर्थात् कब्र देख कर रो रहे हैं? यह सुन कर आप ने कहा: निःसंदेह अल्लाह के संदेष्टा ने फरमाया: बेशक आखिरत की मन्जिलों में कब्र पहली मन्जिल है अगर आदमी इस से बच गया तो उस के बाद का मामला इस से सरल है और यदि इस से न बच सका तो इस के बाद का मामला इस से अधिक कष्ट है उसमान رضي الله عنه कहते हैं रसूलुल्लाह फरमाते हैं: मैं ने कब्र से अधिक भयानक दृश्य (मन्ज़र) नहीं देखा। (अहमद)।

और रही बात कब्र की नेमतों की तो यह सच्चे मोमिनों के लिये है, अल्लाह तआला ने फरमाया: {हकीकत में जिन लोगों ने कहा कि हमारा रब अल्लाह है फिर उसी पर जमे रहे, उन के पास फरिश्ते आते हैं कि तुम कुछ भी भयभीत और दुखी न हो बल्कि उस जन्नत की खुशखबरी सुन लो जिस का तुम से वादा किया गया है"।} [फुस्सिलत:30]।

और अल्लाह तआला ने कहा: {तो जब कि (जान) गले तक पहुँ जाये और तुम उस समय देखते रहो, और हम उस इंसान से तुम्हारे मुकाबले अधिक करीब होते हैं, लेकिन तुम नहीं देख सकते, तो अगर तुम किसी की आज्ञा (इताअत) के अधीन नहीं और उस कथन में सच्चे हो तो तनिक उस प्राण को तो लौटाओ, तो जो कोई भी करीब होगा उसे तो सुख है और खाना है और सुखदायी जन्नत है, और जो इंसान दाहिने हाथ वालों में से है तो सलाम है तेरे लिये कि तू दाहिने वालों में से है, लेकिन अगर कोई झुटलाने वाले पथ भ्रष्टों में से है तो खौलते हुये पानी से मेहमानी है और नरक में जाना है, यह सरासर हक और बिल्कुल निश्चित है, तो तू अपने रब के नाम की पविन्नता बयान कर"।} [अल वाक़ेआ:83-96]।

और नबी ﷺ ने उस मोमिन के विषय में जो अपनी कब्र में दो फरिश्तों के प्रश्नों का उत्तर देगा फरमाया: «आकाश से एक पुकार लगाने वाला पुकार लगायेगा कि मेरे बंदे ने सच कहा, इस के लिये जन्नत का बिस्तर लगा दो

और इसे जन्नत के कपड़े पहनाओ और इस के लिये जन्नत का द्वार खोल दो, कहते हैं कि फिर उस के पास जन्नत की हवा और उस की खुशबू आयेगी और जहाँ तक उस की निगाह जायेगी उस की कब्र को कुशादा कर दिया जायेगा।» इस हदीस को इमाम अहमद और अबूदावूद ने एक लम्बी हदीस में रिवायत की है।

## दूसरी बात: मरने के बाद जी उठने पर इमाम

अर्थात् जब दोबारा सूर में फूँका जायेगा तो लोग संपूर्ण संसार के रब के सामने खड़े होजायेंगे, वे नंगे पैर, नंगे बदन और बिना खतना किये हुये उठेंगे, अल्लाह तआला ने फरमाया: "जैसे हम ने पहली बार पैदा किया था उसी प्रकार दोबारा करेंगे, यह हमारा मज़बूत वादा है और यह हम अवश्य करके ही रहेंगे"। [अल अंबिया:104]।

और मरने के बाद दोबारा उठाया जाना हक और प्रमाणित है, जिस पर कुरआन, हदीस और मुसलमानों का इज्मा (सम्मति) है. अल्लाह तआला ने फरमाया: और मरने के बाद दोबारा उठाया जाना हक और प्रमाणित है, जिस पर कुरआन, हदीस और मुसलमानों का इज्मा (सम्मति) है. अल्लाह तआला ने फरमाया: [अल मोमिनुन:15-16]।

और नबी ﷺ ने फरमाया: «क्रयामत के दिन लोगों को नंगे पैर और बिना खतना किये हुये उठाया जायेगा।» (बुखारी, मुस्लिम),

और इस के सबूत पर मुसलमानों का इज्मा है, और हिक्मत का तक्राज़ा भी यही है, वह इस प्रकार कि अल्लाह तआला अपनी सृष्टि को दोबारा पैदा करे ताकि उन्हें उन कार्यों का बदला दे जिन कार्यों के करने का अपने रसूल की जुबानी मुकल्लफ किया था, अल्लाह तआला ने फरमाया: {क्या तुम यह समझ बैठे हो कि हम ने तुम्हें बेकार ही पैदा किया है, और यह कि तुम हमारी ओर लौटाये ही नहीं जाओगे?} [अल मोमिनून:115].

और अल्लाह तआला ने अपने नबी ﷺ से फरमाया: {जिस (अल्लाह) ने आप पर कुरआन उतारा है वह आप को दोबारा पहली जगह पर लाने वाला है"} [अल कसस:85].

**तीसरी बात: क़यामत और क़यामत की निशानियों के विषय में जो आया है उस पर ईमान लाना:**

यह निशानियाँ क़यामत से पहले ज़ाहिर हूँगी और क़यामत के करीब होने का प्रमाण होंगी, और निशानियों को दो हिस्से छोटी और बड़ी निशानियों में बाँटा गया है.

**छोटी निशानियाँ:**

इस से मुराद वह निशानियाँ हैं जो आम तौर पर क़यामत से अधिक पहले ज़ाहिर हूँगी, और उन में से कुछ निशानियाँ ऐसी हैं जो ज़ाहिर होकर समाप्त हो गई हैं, और ये दोबारा भी ज़ाहिर हो सकती हैं, और उन में से कुछ ऐसी हैं जो ज़ाहिर हो रही हैं और अभी भी बार बार ज़ाहिर हो रही हैं और उन में से कुछ ऐसी हैं जो अभी तक ज़ाहिर नहीं हुयी हैं लेकिन यह ज़ाहिर होंगी जैसा कि हमारे सच्चे नबी ﷺ ने इस की खबर दी है, उदाहरण के तौर पर: मुहम्मद ﷺ का नबी बनाया जाना, आप की मौत, और बैतुल मक्दिस का फतह होना, फिल्लों का ज़ाहिर होना, अमानतदारी का खतम हो जाना, ज्ञान का उठ जाना, जहालत का आम होना, ज़िना (व्यभिचार), सूद, गाना बजाना और शराब नोशी का बढ़ जाना और बकरियाँ चराने वालों का बड़ी बड़ी बिल्डिंगें खड़ी करना, अवलाद का अपनी माँओं की नाफरमानी करना यहाँ तक कि अपनी माँओं से दासियों जैसा मामला करना, क़त्ल का बढ़ जाना, भूकंप का अधिक आना, धरती का धंस जाना, मस्ख(विकृत) और दोषारोपण का ज़ाहिर होना बारीक कपड़ों का पहनना (जिस से बदन ज़ाहिर हो), अधिकतर झूठी गवाही देना, सत्य गवाही का छुपाना आदि उन चीज़ों का आम हो जाना जिन का बयान कुरआन और हदीस में आया है.

**बड़ी निशानियाँ:**

और यह महान बातें हैं जिन का ज़ाहिर होना इस बात की दलील होगी कि क़यामत करीब है और इस महान दिन के आने में बहुत कम समय रह गया है, और यह दस निशानियाँ हैं: दज्जाल का आना, ईसा बिन मरयम का उतरना, याजूज माजूज का ज़ाहिर होना, और तीन खस्फ (ज़मीन का धंसना) होगा एक खस्फ पूरब में और एक पश्चिम में और एक खस्फ अरब के जज़ीरे में, और धुआँ का उठना, और सूरज का पश्चिम से निकलना, एक जानवर का निकलना, और उस आग का ज़ाहिर होना जो लोगों को एकन्न होने के स्थान पर हाँक कर ले जायेगी, और निशानियाँ एक के बाद एक प्रकट होंगी, जब इन निशानियों में से पहली निशानी ज़ाहिर हो जायेगी तो दूसरी उस के बाद ही ज़ाहिर हो जायेगी.

चैथी बात: क़यामत की हौलनाकी और उस की घटनाओं के विषय में बताई गई बातों पर ईमान जैसे:

1- बड़े बड़े पहाड़ों को कूट कर मिट्टी बना दिया जायेगा और उसे ज़मीन के बराबर कर दिया जायेगा,अल्लाह तआला ने फरमाया: {और आप पहाड़ों को अपनी जगह पर जमा हुआ समझते हैं लेकिन वे भी बादल की तरह उड़ते फिरेंगे"} [अन्नमल:88].

और अल्लाह तआला ने फरमाया: {और पहाण बिल्कुल कण-कण कर दिये जायेंगे,फिर वह बिखरी धूल समान हो जायेंगे"} [अल वाकेआ:5-6].

और अल्लाह तआला ने फरमाया: {और पहाड़ रंगीन ऊन की तरह हो जायेंगे"} [अल मआरिज:9].

और अल्लाह तआला ने फरमाया: {वे आप से पहाड़ों के बारे में सवाल करते हैं तो कह दें उन्हें मेरा रब कण-कण करके उड़ा देगा,और (धरती) को समतल चटियल मैदान करके छोड़ेगा,जिस में न तो कहीं मोड़ देखेगा न ऊँच नीच"} [ताहा:105-107].

2- समुद्रों का फट पड़ना और उस का भड़काया जाना,यह समुद्र हमारी धरती के अधिकतर हिस्से को घेरे हुये हैं उस दिन बह चलेंगे,अल्लाह तआला ने फरमाया: {और जब समुद्र बह चलेंगे"} [अल इन्फितार: 3].

{और जब समुद्र भड़काये जायेंगे"} [अतक्वीर: 6].

3- वह धरती जिस से लोग परिचत हैं बदल दिया जायेगा,इसी प्रकार आकाशों को भी बदल दिया जायेगा,इन्हें ऐसी धरती पर उठाया जायेगा जिस का न तो इन्हें ज्ञान होगा और न प्रभाव, अल्लाह तआला ने फरमाया: {जिस दिन धरती इस धरती के इलावा दूसरी बदल दी जायेगी और आकाशों को भी और सभी के सभी एक अल्लाह ज़बरदस्त के सामने होंगे"} [इब्राहीम: 48].

नबी ﷺ ने फरमाया: «क़यामत के दिन उजले गेहूँ की रोटी जैसी साफ और सुर्खी मायल उजली धरती पर लोगों का हश्र होगा,जिस में किसी प्रकार का कोई निशान नहीं होगा» (बुखारी,मुस्लिम)

धरती सफेद हो जायेगी अर्थात उस पर कोई चिन्ह और निशान नहीं होगा।

4: वहाँ पर नई नई चीज़ें देखेंगे,वे सूरज और चाँद को एक साथ देखेंगे जिस



से उन की परेशानी और डर बढ़ जायेगा,अल्लाह तआला ने फरमाया: {तो जिस समय आँखें पथरा जायेंगी और चाँद प्रकाशहीन(बेनूर) हो जायेगा और सूरज और चाँद इकठा कर दिये जायेंगे,उस दिन इंसान कहेगा कि आज भागने की जगह कहाँ है“?}[अल कियामह: 7-10].

5- जिस दिन सूर फूँका जायेगा वह दुनियावी ज़िन्दगी का अंतिम दिन होगा,और जब वह दिन आयेगा तो सूर में फूँक दिया जायेगा,फिर यह फूँक आसमान और जमीन के बीच में रहने वालों के जीवन को समाप्त करदेगी। {और सूर फूँक दिया जायेगा तो आकाशों और धरती वाले सभी बेहोश होकर गिर पड़ेंगे लेकिन जिसे अल्लाह चाहे“।}[अज्जुमर: 68].

और यह एक खतरनाक और विनाशकारी फूँक होगी जिसे सुनने के बाद कोई व्यक्ति किसी चीज़ का आदेश देने की सकत नहीं रख सकेगस और न ही अपने घर वालों और न ही दोस्तों के पास लौट सकेगा। {उन्हें केवल एक ज़ोरदार चीख का इंतज़ार है जो उन्हें आ पकड़ेगी,और ये आपसी लड़ाई झगड़े में ही होंगे,उस समय ये न तो वसीयत कर सकेंगे और न अपने परिवार की ओर लौट सकेंगे“।}[यासीन: 49-50].

और नबी ﷺ ने फरमाया: «फिर सूर में फूँक दिया जायेगा जो भी इसे सुनेगा वह एक तरफ से अपनी गरदन झुका देगा और दूसरी तरफ से उठा लेगा अर्थात अचेत होकर गिर पड़ेगा,फरमाया: सब से पहले सूर की आवाज़ सुनने वाला वह व्यक्ति होगा जो अपने ऊँट के हौज़ पर कलावा कर रहा होगा,फिर वह अचेत हो जायेगा और दूसरे लोग भी अचेत हो जायेंगे» (मुस्लिम)

6- महशर की ज़मीन पर सब के सब इकठा होंगे चाहे वे पहले पैदा हुये हों या सब से बाद में अर्थात उस धरती पर अक्लो आखिर,जिन्नात,इंसान,बल्कि उन के जानवर भी इकठा होंगे, अल्लाह तआला ने फरमाया: {बेशक इस में उन लोगों के लिये नसीहत है जो कयामत के अज़ाब से डरते हैं,वह दिन जिस में सब लोग जमा किये जायेंगे और ये वो दिन है जिस में सब हाज़िर किये जायेंगे।}[हूद: 103].

और अल्लाह तआला ने फरमाया: {कह दीजिये कि बेशक सब अगले और पिछले ज़रूर जमा किये जायेंगे,एक निर्धाति दिन के समय“।}[अल वाक्केआ: 49-50].

7- लोग उसी प्रकार नंगे उठायें जायेंगे जैसा कि अल्लाह तआला ने उन्हें नंगे पैदा किया था,और इस भयानक स्थिति की गंभीरता को देखते हुये वे इस की ओर मुतवज्जेह ही नहीं होंगे,और माई आयशा रज़िअल्लाहु अन्हा ने भी इस पर आश्चर्य ज़ाहिर किया था जैसा कि आयशा रज़िअल्लाहु अन्हा से रिवायत है,कहती हैं: «रसूलुल्लाह ने फरमाया: लोग नंगे पैर नंगे जिस्म और बिना खतना किये हुये उठायें जायेंगे,आयशा कहती हैं कि मैं ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल! मर्द औरत सब नंगे उठायें जायेंगे ऐसी सूत में तो एक दूसरे को देखेंगे,आप ने फरमाया: वह इस विषय में सोचें इस से कहीं भयानक स्थिति होगी» (बुखारी)

8: मज़्लूम को ज़ालिम से बदला दिलाया जायेगा, यहाँ तक कि चैपायों को भी (बदला दिलाया जायेगा) नबी ﷺ ने फरमाया: «अल्लाह तआला ने फरमाया: «तुम ज़रूर क़यामत के दिन हक़ वालों के हुकूक लौटाओगे, यहाँ तक कि बिना सींग वाली को सींग वाली बकरी से बदला दिलाया जायेगा» (मुस्लिम),

और नबी ﷺ ने फरमाया: «जिस व्यक्ति ने अपने किसी भाई पर उस की इज़ज़त व आबरू या किसी और चीज़ में जुल्म किया हो तो वह आज ही उस को माफ़ करवाले, इस से पहले कि वह दिन आ जाये जिस दिन न दीनार होगा न दिरहम, अगर उस के पास नेकी होगी तो उस के जुल्म के बराबर ये नेकी उस से ले ली जायेगी, और अगर उस के पास नेकी नहीं होगी तो उस के साथी अर्थात मज़्लूम की बराइयाँ लेकर उस पर लाद दी जायेंगी» (बुखारी)

9- सूरज का लोगों के अधिक निकट होना यहाँ तक कि लोग अपने आमाल अनुसार पसीने में डूबे हुये होंगे, नबी ने फरमाया: «क़यामत के दिन सूरज लोगों के अधिक निकट होगा यहाँ तक कि कुछ लोगों से एक मील के फासिले पर ही होगा, सुलैम बिन आमिर कहते हैं: अल्लाह की क़सम मुझे पता नहीं कि अल्लाह के रसूल ने मील से क्या मुराद लिया है, मील से मुराद एक मील की दूरी है या उस से सुरमे की सलाई मुराद है, आप ने फरमाया: लोग अपने आमाल के हिसाब से पसीने में डूबे हुये होंगे, कोई अपने दूखनों तक तो कोई अपने घुटनों तक डूबा होगा, और कोई अपनी कमर तक और किसी को पसीने की लगाम लगाई जायेगी अर्थात वह मुंह तक पसीने में डूबा होगा, रावी कहते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने हाथ से अपने मुँह की ओर इशारा किया» (मुस्लिम)

10- कुछ लोग अपने नामये आमाल दायें

हाथ में लिये हुये होंगे तो कुछ लोग बायें हाथ में और लोग आश्चर्य, डर और भयभीत होंगे यहाँ तक कि हर व्यक्ति का नामये आमाल उस के हाथ में आ जायेगा, जब नामये आमाल उन के दायें हाथ में दिया जायेगा तो इस से मोमिन खुश होंगे, उन्हें समझ आजायेगा कि मुक्ति उन के निकट है, जब के काफ़िरों और मुनाफ़िकों के दुख बढ़ जायेंगे जब उन के नामये आमाल उन के बायें हाथ में आ जायेंगे, यह पूरा पूरा बदला होगा, अल्लाह तआला ने फरमाया: {तो जिस का कर्मपन्न(आमाल नामा) उस के दाहिने हाथ में दिया जायेगा तो वह कहने लगेगा कि लो मेरा कर्मपन्न पढ़ लो, मुझे तो पूरा विश्वास था कि मैं अपना हिसाब पानेवाला हूँ, तो वह एक सुखद जीवन में होगा, ऊँचे जन्नत में, जिस के फल झुके पड़े होंगे, (उन से कहा जायेगा कि) मज़े से खाओ पियो, अपने उन कर्मों के बदले जो तुम ने पिछल ज़माने में किये, लेकिन जिसे उस का कर्मपन्न बायें हाथ में दिया जायेगा, वह तो कहेगा कि हाय मुझे मेरा कर्मपन्न दिया ही न जाता, और मैं जानता ही नहीं कि हिसाब क्या है? काश! मौत (मेरा) काम ही खत्म कर देती, मेरे धन ने भी मुझे कोई लाभ न दिया, मेरा राज्य भी मुझ से जाता रहा"} [अलहाक्का: 19-29].

11- अल्लाह तआला ने फरमाया: अधिक डर और भय के कारण आदमी किसी के विषय में कोई प्रश्न नहीं करेगा उसे केवल अपनी जान के लाले पड़े होंगे, अल्लाह तआला ने फरमाया: {उस दिन न माल काम आयेगा और न ही बेटे"} [अश्शोरा: 88].

और अल्लाह तआला ने फरमाया: {तो आदमी उस दिन भागेगा अपने भाई से, अपनी माँ और अपने बाप से, अपनी पत्नी और संतान से, उन में से हर एक को उस दिन एक ऐसी फिक्र होगी जो उसे (मशगूल रखने को) काफ़ी होगी"} [अबस: 34-37].

## पाँचवीं बात: हिसाब और बदले पर ईमान:

आदमी के कर्मों का हिसाब होगा और उस का बदला दिया जायेगा, अल्लाह तआला ने फरमाया: {बेशक हमारी ओर उन को लौटना है,फिर बेशक उन से हिसाब लेना है"}।

[अलगाशिया: 25-26].

और अल्लाह तआला ने फरमाया: {जो इंसान अच्छा काम करेगा उसे उस के दस गुना मिलेंगे,और जो बुरे काम करेगा उसे उस के बराबर सज़ा मिलेगी और उन लोगों पर जुल्म न होगा"}।[अलअन्आम: 160].

और अल्लाह तआला ने फरमाया: {और हम कयामत के दिन उन के बीच ठीक-ठीक तौल की तराजू ला रखेंगे,फिर किसी पर किसी प्रकार का जुल्म न किया जायेगा,और अगर एक सरसों के दाने के बराबर भी (अमल) होगा उसे हम सामने लायेंगे,और हम हिसाब करने के लिये काफी हैं"}।[अलअंबिया: 47].और इब्ने उमर रज़िअल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि नबी ﷺ ने फरमाया: «बेशक अल्लाह तआला मोमिन बंदे को अपने करीब करेगा,और उस पर अपना परदा डाल कर उसे छिपाता है,और कहता है: क्या तुम इस इस गुनाह को जानते हो,वह कहेगा हाँ ऐ मेरे पालनहार यहाँ तक कि वह अपने सारे गुनाहों का इक्रार कर लेगा और यह समझेगा कि वह हलाक होगया, तो अल्लाह तआला उस से कहेगा,मैं ने दुनिया में तेरे गुनाहों को छिपाया और आज मैं तेरे गुनाहों को क्षमा कर रहा हूँ,नबी ﷺ ने फरमाया: फिर उसे उस की नेकियों की पंजिका दी जायेगी,रही बात काफिरों और कपटाचारियों की तो उन्हें सारी मखलूक के सामने बुलाया जायेगा।» {ये वह लोग हैं जिन्होंने अपने रब पर झूट बाँधा,सावधान अल्लाह की लानत है ज़ालिमों पर"}।[हूद: 18]. (बुखारी,मुस्लिम),

और नबी ﷺ से हदीसे कुदसी में साबित है अर्थात नबी ﷺ अल्लाह तआला से रिवायत करते हैं कि अल्लाह तआला ने फरमाया: «अल्लाह तआला ने नेकियों और बुराइयों को लिख दिया है फिर उसे बयान किया है,जिस ने नेकी का इरादा किया परन्तु नेकी न कर सका तो अल्लाह तआला उस के लिये पूरी एक नेकी लिख देता है और अगर इरादा करने के बाद नेकी कर लेता है तो उस समय उस के लिये दस नेकियों से लेकर सात सौ गुना तक बल्कि उस से भी अधिकतर नेकियाँ लिख देता है और अगर बुराई का इरादा करके उसे न करे तो अल्लाह तआला उस के लिये पूरी एक नेकी लिखता है और अगर इरादा करके उस बुराई को कर लेता है तो अल्लाहत तआला उस के लिये केवल एक गुनाह लिखता है।» (बुखारी,मुस्लिम),

हसन बसरी से कहा गया: हम ने देखा कि ताबईन इबादत में सहाबा से बड़े हुये हैं तो सहाबा उन से किस चीज़ में आगे थे? हसन ने कहा यह लोग इबादत करते हैं इस हाल में कि दुनिया इन के दिलों में है जब कि सहाबा ने अल्लाह की इबादत की इस हाल में कि उन के दिलों में आखिरत थी।

और हिसाबो किताब और बदले के प्रमाण पर मुसलमानों का इज्मा है,और हिक्मत का तकाज़ा भी यही है क्योंकि अल्लाह तआला ने किताबें उतारीं,रसूलों को भेजा और बंदों के लिये अपने ऊपर ईमान और अपनी इताअत को अनिवार्य किया और जो न उस की इताअत करे और न उस के रसूल की इताअत करे और न उस पर ईमान लाये उसे सख्त दर्दनाक अज़ाब की धमकी दी है,अगर हिसाबो किताब और बदले का मामला न होता तो यह बे मक़सद होता जिस से अल्लाह तआला पाक है,और अल्लाह तआला ने

अपने इस कथन से इस की ओर इशारा किया है: {फिर हम उन से ज़रूर पूछ करेंगे जिन के पास पैग़ाम भेजा गया और पैग़म्बरों से ज़रूर पूछ करेंगे,फिर हम उन के सामने इल्म के साथ बयान कर देंगे और हम बेखबर नहीं थे"}।

[अल आराफ़: 6-7].

### छठवीं बात: जन्नत और जहन्नम पर ईमान:

और यह सृष्टि का अंतिम हमेशगी वाला ठिकाना है,जन्नत तो यह नेमतों वाला घर है जिसे अल्लाह तआला ने उन परहेज़गार मोमिनों के लिये तय्यार किया है जो उन चीज़ों पर ईमान लाये जिन पर ईमान लाने को अल्लाह तआला ने ज़रूरी कर दिया है, और उन्होंने ने अल्लाह और उस के रसूल की पैरवी की वह अल्लाह के लिये मुख़िलस हैं और उस के पैग़म्बर की इताअत करने वाले हैं,जन्नत में ऐसी नेमतें होंगी जिन्हें न तो किसी आँख ने देखी होंगी और न ही किसी कान ने सुनी होंगी और न ही किसी इंसान के दिल में खयाल आया होगा,अल्लाह तआला ने फरमाया: {बेशक जो लोग ईमान लाये और नेकी के काम किये,यह लोग बेहतरीन मख़लूक हैं,उन का बदला उन के रब के पास हमेशा रहने वाले स्वर्ग हैं जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, जिन में वह हमेशा रहेंगे,अल्लाह उन से खुश हुआ और ये उस से,यह उस के लिये है जो अपने रब से डरे"}।[अल बय्यिना: 7-8].

और अल्लाह तआला ने फरमाया: {कोई पराणी नहीं जानता जो कुछ हम नें उन की आँखों की ठंडक उन के लिये छिपा रखी है,जो कुछ करते थे यह उस का बदला है"}।[अस्सज्दा: 17].

और उन नेमतों में श्रेष्ठ नेमत स्वर्ग में अल्लल्लाह तआला का दीदार है,अल्लाह तआला ने फरमाया:{उस दिन बहुत से मुँह ताज़ा होंगे अपने रब की ओर देखते होंगे"}।[अल कियामा: 22-23].

अल्लाह तआला ने फरमाया: {जिन लोगों ने नेक काम किया है उन के लिये भलाई है,और कुछ ज़्यादा भी"}।[सूनस: 26].

हुस्ना अर्थात स्वर्ग है और ज़्यादा अर्थात अल्लाह तआला का दीदार है,जैसा कि नबी ﷺ ने फरमाया: «जब जन्नती जन्नत में प्रवेश कर जायेंगे कहा कि अल्लाह तआला कहेगा: तुम्हें किसी और चीज़ की इच्छा है? वह कहेंगे क्या तू ने हमारे चेहरों को रोशन नहीं किया,क्या तू ने हमें जन्नत में दाखिल नहीं किया और तू ने हमें जहन्नम से छुटकारा नहीं दिया?कहा कि फिर अल्लाह तआला परदा हटा देगा,तो लोगों को रब के दीदार से अधिक उत्तम चीज़ दी ही नहीं गई, फिर पैग़म्बर ने यह आयत पढ़ी»: {जिन लोगों ने नेक काम किया है उन के लिये भलाई है,और कुछ ज़्यादा भी"}। [यूनस: 26] (मुस्लिम).

और जहन्नम तो वह अज़ाब का घर है जिसे अल्लाह तआला ने उन ज़ालिम काफ़िरों के लिये तय्यार किया है जिन्होंने अल्लाह का इन्कार किया और उस के पैग़म्बर की नाफरमानी की,उस में अज़ाब और ऐसे अनेक प्रकार के दुख दिये जायेंगे जिस के बारे में आदमी सोच भी नहीं सकता.





अल्लाह तआला ने फरमाया: {और उस आग से डरो जो काफिरों के लिये तय्यार की गई है"}[आले इमरान: 131].

और अल्लाह तआला ने फरमाया: {बेशक हम ने ज़ालिमों के लिये वह आग तय्यार कर रखी है जिस की परिधि (कनातें) उन्हें घेर लेंगी,और अगर वह फरयाद करेंगे तो उन की मदद उस पानी से की जायेगी जो तलछट जैसा होगा वह चेहरे भून देगा,बड़ा ही बुरा पानी है और बड़ा बुरा आरामगाह (नरक) है"}[अल कहफ: 29].

और अल्लाह तआला ने फरमाया: {अल्लाह ने काफिरों पर धिक्कार भेजी है और उन के लिये भड़कती हुयी आग तय्यार कर रखी है,जिस में वे हमेशा रहेंगे,वे कोई पक्षधर(वली) और मदद करने वाला न पायेंगे,उस दिन उन के मुँह आग में उलटे पलटें जायेंगे कहेंगे कि काश हम अल्लाह(तआला) और रसूल के हुक्म की इताअत करते"}[अल अहज़ाब: 64-66].

सब से हलका अज़ाब जिस व्यक्ति को दिया जायेगा -अल्लाह की पनाह-जिस के बारे में नबीﷺ ने ज़िक्र किया,आप ने फरमाया: «जहन्नमियों में से जिसे सब से हलका अज़ाब दिया जायेगा वह ऐसा व्यक्ति होगा जिस के दोनों पैरों के नीचे आग रख दी जायेगी जिस से उस का दिमाग उबाल खायेगा।» (बुखारी)

**प्रलोक पर ईमान लाने के फल:**

1- ईमान के एक रुकन का वजूद,अल्लाह पर ईमान उस वक़्त तक साबित न होगा जब तक कि प्रलोक पर ईमान न हो,क्योंकि यह ईमान का एक रुकन है इस लिये अल्लाह तआला ने हमारे ऊपर गैर मोमिनो से जंग को अनिवार्य किया है, अल्लाह तआला ने फरमाया: {उन लोगों से लड़ाई करो जो अल्लाह और प्रलोक पर ईमान नहीं रखते"}[अत्तोबा: 29].

2- दुनिया और आखिरत में शान्ति और बड़े सवाब का वादा, अल्लाह तआला ने फरमाया: {याद रखो कि अल्लाह के मिन्नों पर न कोई डर है न वे दुखी होते हैं"}[यूनस: 62].

3- बड़े पुण्य का वचन,अल्लाह तआला ने फरमाया: {बेशक जो मुसलमान हो यहूदी हो,नसारा (ईसाई) हो या साबी हो,जो कोई भी अल्लाह तआला और क़यामत के दिन के दिन पर ईमान लायेगा और अच्छे काम करेगा उस का बदला उस के रब के पास है,और उन को न कोई डर है और न कोई ग़म होगा"}[अल बकरा: 62].

4-भलाई के काम पर उभारना, अल्लाह तआला ने फरमाया: {ऐ ईमान वाले! अल्लाह के हुक्म की पैरवी करो और रसूल की और अपने में से हाकिमों के हुक्म को मानो,फिर अगर किसी बात में एख़्तिलाफ़ करो तो उसे लौटाओ अल्लाह और उस के रसूल की ओर अगर तुम्हें अल्लाह और क़यामत के दिन पर ईमान है,यह सब से अच्छा है और नतीज़ा के एतबार से अधिक उत्तम है"}[अन्निसा: 59].

और अल्लाह तआला ने फरमाया: {अल्लाह की मस्जिदों को तो वह आबाद करते हैं जो अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर ईमान रखते हों"}[अतोबा: 18].

और अल्लाह तआला ने फरमाया: {यकीनन तुम्हारे लिये रसूलुल्लाह में अच्छा नमूना है हर उस इन्सान के लिये जो अल्लाह और क़यामत के दिन की उम्मीद रखता है और अधिकतर अल्लाह को याद करता है"}[अल अहज़ाब: 21].

और अल्लाह तआला ने फरमाया: {बेशक तुम्हारे लिये उन में अच्छे आदर्श (उसवा) हैं हर उस इन्सान के लिये जो अल्लाह और क़यामत के दिन की मुलाक़ात पर यकीन रखता हो"}[अल मुत्तहिना: 6].

और अल्लाह तआला ने फरमाया: {और अल्लाह की खुशी के लिये ठीक ठाक गवाही दो यही है वह जिस की शिक्षा (नसीहत) उन्हें दी जाती है जो अल्लाह पर और क़यामत के दिन पर ईमान रखते हों"}[अतलाक़: 2].

5- बुराइयों से दूरी,अल्लाह तआला ने फरमाया: {उन के लिये जायज़ नहीं की अल्लाह ने उन के रिहम में जो पैदा किया हो उसे छिपायें अगर उन्हें अल्लाह (तआला) पर और क़यामत के दिन पर ईमान हो"}[अल बकरा: 228].

और अल्लाह तआला ने फरमाया: {और जब तुम अपनी औरतों का तलाक़ दो और वह अपनी इद्दत पूरी करलें तो उन्हें उन के पतियों से शादी करने से न रोको जब कि वह आपस में भलाई के एतबार से राज़ी हों,यह तालीम उन्हें दी जाती है जिन्हें तुम में से अल्लाह (तआला) पर और क़यामत के दिन पर यकीन और ईमान हो"}[अल बकरा: 232].

मोमिनों की माँ आयशा रज़िअल्लाहु अन्हा ने एक महिला से कहा: मौत को अधिक याद करो इस से तुम्हारा दिल नरम होगा.

और अल्लाह तआला ने फरमाया: {अल्लाह पर और क़यामत (प्रलय) के दिन पर ईमान और यकीन रखने वाले तो अपने माल से और जान से जिहाद करने से रुके रहने की कभी भी तुझ से इजाज़त नहीं माँगेंगे और अल्लाह तआला परहेज़गारों को अच्छी तरह जानता है,यह इजाज़त तो तुझ से वही माँगते हैं जिन्हें न अल्लाह पर ईमान है न आखिरत के दिन पर यकीन है जिन के दिल शक में पड़े हुये हैं और यह अपने शक ही में भटक रहे हैं"}[अतोबा: 44-45].

इसी लिये जो इस दिन पर ईमान नहीं लाता वह हाराम में पड़ने से नहीं बचता है और न ही उस पर शर्म करता है {क्या तू ने (उसे भी) देखा जो बदले के दिन को झुटलाता है, यही वह है जो अनाथ (यतीम) को धक्के देता है,और गरीब को खाना खिलाने की प्रेरणा (तरगीब) नहीं देता"}[अलमाऊन:1-3].

6-मोमिन चूँकि आखिरत की नेमतों और सवाब की उम्मीद रखता है इस लिये दुनिया की चीज़ों के न मिलने पर भी उसे तसल्ली रहती है,जन्नत का मिलना बड़ी कामयाबी है और दुनियावी ज़िन्दगी केवल धोके का सामान है,अल्लाह तआला ने फरमाया: {हर जानदार को मौत का मज़ा चखना ही है, और क़यामत के दिन तुम अपने बदले पूरे पूरे दिये जाओगे लेकिन जो इन्सान आग से हटा दिया जाये और जन्नत में दाखिल करा दिया जाये बेशक वह सफल हो गया और दुनिया की ज़िन्दगी केवल धोके का सामान है"}[आले इमरान: 185].

और अल्लाह तआला ने फरमाया: {आप कह दीजिये कि मैं अगर अपने रब का कहना न मानूँ तो मैं एक बड़े दिन के अज़ाब से डराता हूँ,जिस से उस दिन सज़ा खत्म कर दी जायेगी उस पर अल्लाह ने बहुत रहमत की,और यह वाज़ेह कामयाबी है"}[अल अनआम: 15-16].

और अल्लाह तआला ने फरमाया: {और प्रलोक (आखिरत) बहुत बेहतर और स्थाई (दायमी) है"}[अल आला: 17].

हसन रहिमहुल्लाह ने कहा: जिस ने मौत को पहचान लिया उस पर दुनिया की परेशानियाँ सरल हो जाती हैं  
दिल में सुधार नहीं हो सकता,

और न वह कामयाब हो सकता है, और न ही उसे प्रसन्नता प्राप्त हो सकती है, और न ही आनंद, और न उसे अच्छा लग सकता है और न ही सुकून मिलता है, और न ही उसे शान्ति मिल सकती है मगर अपने रब की इबादत करके, उस से प्रेम करके, और उस की ओर लौट करके.

खुल इस्लाम इब्ने तैमियाश्



## समीक्षा

1- शांति और सुकून से दीन और ईमान का क्या सम्बंध है व्याख्या करो।

2- ईमान की परिचय करो और समुदायों पर इस का क्या प्रभाव है?

3- अल्लाह तआला पर ईमान लाने के तकाजे और उस के उपकरण क्या हैं?

4-अल्लाह तआला के निकट सब से श्रेष्ठ और पाकीज़ा कार्य क्या है?

5- आप को आप के परिवार और आप के समुदाय को अल्लाह तआला पर ईमान लाने का जो फल मिला उस की संख्या बताइये.

6-रसूलों पर ईमान लाने के क्या तकाजे हैं ?

7- क्यों सहाबा से प्रेम को रसूल पर ईमान लाने का भाग माना गया है ?

8- क़यामत के दृश्यों,उस की भयावहताओं जिसे आप जानते हैं उसे तसलसुल (अनुकर्म) के साथ बयान करें, क़यामत की छोटी निशानियों से शुरू करके जन्नतियों के जन्नत में और जहन्नमियों के जहन्नम में प्रवेश करने तक.

9- वह मुख्य कार्य कौन कौन से हैं जो बंदे को जन्नत में ले जायेंगे और उसे जहन्नम से छुटकारा देंगे ?

10- प्रलोक पर ईमान का अल्लाह की इबादत उस से डर और उस की मुहब्बत पर क्या प्रभाव हुआ और उस का क्या फल आप को मिला, इस की व्याख्या कीजिये ?

11- जन्नत की सब से महान नेमत और सब से हलका अज़ाब क्या है ?